Toppersnotes
Unleash the topper in you

सामान्य हिन्दी

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्णमाला	1
2	संधि	5
3	समास	17
4	उपसर्ग	27
5	प्रत्यय	31
6	संज्ञा	36
7	सर्वनाम	38
8	विशेषण	40
9	क्रिया	43
10	अव्यय एवं अविकारी शब्द	46
11	काल	50
12	पर्यायवाची शब्द	54
13	विलोम शब्द	59
14	वर्तनी शुद्धि	65
15	वाक्य के एक शब्द	70
16	लिंग	78
17	कारक	83
18	शब्द युग्म	86
19	तत्सम व तद्भव शब्द	94
20	रस	99
21	छंद	106
22	अलंकार	110
23	मुहावरे	114

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	लोकोक्तियाँ	122
25	हिन्दी लेखकों का सामान्य परिचय एवं रचनाएँ	129
26	हिंदी भाषा में पुरस्कार	135
27	अपठित गद्यांश	138

1 CHAPTER

वर्णमाला

- किसी भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसे छोटे भागों में और न तोड़ा जा सकता हों, ध्वनि कहलाती है, ध्वनि को वर्ण कहा जाता है। **वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला** कहा जाता है।
- हिंदी वर्णमाला में मूलत: कुल 44 वर्ण होते हैं जिन्हें 2 भागों में विभक्त गया है।

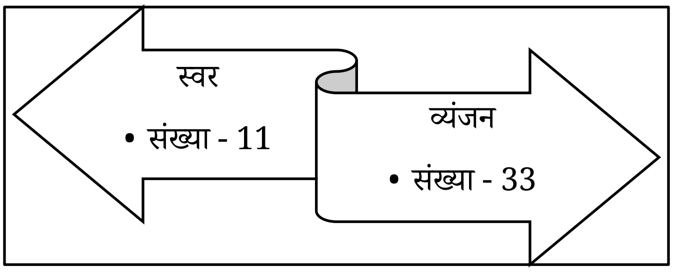

क्या आप जानते हैं?

वर्णों को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं। वर्णों की संख्या कहीं 52 तो कहीं 44 मानी गयी है। सरकारी वर्णमाला में ड़, ढ़, श्र को स्थान नहीं दिया गया है, अत: वहाँ कुल वर्णों की संख्या 53-3 = 49 ही मानी गयी है।
सर्वमान्य मत - 44 वर्ण हैं। (11 स्वर तथा 33 व्यंजन)

वर्णों का वर्गीकरण

- **श्वास वायु के आधार पर**
  - **(i) अनुनासिक** – अनुनासिक वर्णों की ध्वनि में श्वास वायु मुख के साथ नाक से बाहर निकलती है। अनुनासिक वर्णों में चन्द्रबिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे – अँ, इँ, प्रत्येक वर्ग का पाँचवां वर्ण।
  - **(ii) अल्प प्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय वायु का कम प्रवाह होता है, अल्प प्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का 1, 3 व 5 वाँ वर्ण।
  - **(iii) महाप्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु का प्रवाह होता है, महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण।
- **स्वर तत्रों की स्थिति व कम्पन्न के आधार पर**
  - **(i) घोष/सघोष :-** घोष का शाब्दिक अर्थ है नाद या गूंज। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वर तंत्र में कंपन (गूंज उत्पन्न होना) होता है, उन्हें घोष वर्ण कहते हैं।
    घोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के अन्तिम तीन वर्ण घोष वर्ण कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं। इनकी कुल संख्या तीस है।
  - **(ii) अघोष :-** जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु में कम्पन नहीं होता अतः कोई गूंज उत्पन्न नहीं होती वे वर्ण अघोष वर्ण कहलाते हैं।
    अघोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के पहले और दूसरे वर्ण अघोष वर्ण होते हैं, इनकी संख्या तेरह है।

स्वर

- ऐसी ध्वनियाँ अथवा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अन्य किसी ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं।
- स्वर स्वतंत्र एवं पूर्ण होते हैं। **स्वर 11 होते हैं** - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

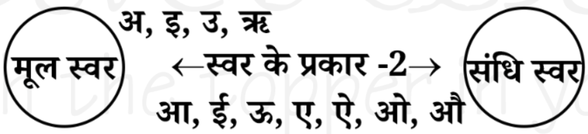

- **इन्हें मूलत: 3 भागों में बांटा जा सकता है।**
  - **(i) ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगे उन्हें हस्व स्वर कहा जाता है। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। जैसे - अ, इ, उ।
  - **(ii) दीर्घ स्वर -** जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगे उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इन्हें मात्रा द्वारा भी दर्शाया जाता है। ये दो स्वरों को मिला कर बनते हैं अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। जैसे – आ, ई, ऊ।
  - **(iii) प्लुत स्वर** – जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ सवा से भी अधिक समय लगता है वे प्लुत स्वर कहलाते हैं।

➢ **जिह्वा के आधार पर स्वर**

(i) **अग्र स्वर** –स्वर जिसमे जीभ का अग्र भाग प्रयोग में आता हैं। - इ, ई, ए, ऐ

(ii) **मध्य स्वर** – जिसमे जीभ का मध्य भाग प्रयोग में आता हैं। - अ

(iii) **पश्चस्वर** – जिसमे जीभ का पश्च भाग प्रयोग में आता हैं। - आ, उ, ऊ, ओ, औ

वर्ण	**उच्चारण स्थान**
अ, आ	कंठ
इ, ई	तालु
ऋ	मूर्धा
उ, ऊ	ओष्ठ
ए, ऐ	कंठ + तालव्य
ओ, औ	कंठ + ओष्ठ

महत्वपूर्ण तथ्य –

➢ प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।

➢ दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है

➢ सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है

समानाक्षर स्वर

✓ आ – अ + अ

✓ ई – इ + इ

✓ ऊ – उ + उ

संधि स्वर

✓ ए – अ + इ

✓ ऐ – अ + ए

✓ औ – अ + ओ

➢ अंग्रेज़ी से गृहित स्वर – ऑ (डॉक्टर, कॉलेज)

व्यंजन

➢ स्वरों की सहायता से बोली जाने वाली ध्वनियों को ही व्यंजन कहा जाता है।

➢ जब हम क बोलते हैं तब उसमें क् + अ मिला होता है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोला जाता है।

➢ व्यंजन अस्वतंत्र एवं अपूर्ण होते हैं।

➢ व्यंजन को **मूलतः 3 भागों** में बांटा जा सकता है।

व्यंजन के मूलत: तीन प्रकार हैं

- **स्पर्श - संख्या : 25**
- **अंत:स्थ - संख्या : 4**
- **ऊष्म - संख्या : 4**

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों को आठ भागों में बांटा गया है है:

1. **स्पर्शी** : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में फेफड़ों सद्वारा छोड़ी गयी वाली हवा वाग्यंत्र के किसी अवयव का स्पर्श करके बाहर निकलती है, स्पर्शी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे – क् ख् ग् घ्, ट्, ठ ड ढ़, त्, थ् ध, प् फ् ब् भ्
2. **संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तब वायु उनसे घर्षण/संघर्ष करती हुई बाहर निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - श, ष्, स्, ह, ख्, ज, फ्
3. **स्पर्श संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में स्पर्श का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है, वे स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - च्, छ, ज्, झ्।
4. **नासिक्य :** जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख अंश नाक से निकलता है। जैसे - ङ्, ञ, ण, न, म्।
5. **पार्श्विक :** जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग मसूड़े को छूता है और वायु पार्श्व आस-पास से निकल जाती है, वे पार्श्विक हैं - जैसे - 'ल्'।

6. **प्रकम्पित :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा दो-तीन बार कंपन करती है, वे प्रकंपित व्यंजन कहलाते हैं। जैसे- 'र'

7. **उत्क्षिप्त :** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक झटके से ऊपर उठकर नीचे गिरती है तो वह उत्क्षिप्त ध्वनि कहलाती है। जैसे - ड्, ढ़

8. **संघर्ष हीन :** जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा बिना किसी संघर्ष या अवरोध के बाहर निकलती है वे संघर्षहीन ध्वनियाँ कहलाती हैं। जैसे-य, व। इनके उच्चारण में स्वरों से मिलता जुलता प्रयत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।

वर्ग	स्पर्श वर्ण					उच्चारण स्थान
क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	दंत
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ
प्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	
	अघोष	अघोष	सघोष	सघोष	सघोष	घोष

व्यंजन प्रकार	वर्ण	उच्चारण स्थान
अंत:स्थ व्यंजन	य	तालु
	र	दंत
	ल	दंत
	व	दंत + ओष्ठ
ऊष्म व्यंजन	श	तालु
	ष	मूर्धा
	स	दंत
	ह	कंठ

संयुक्त व्यंजन

- हिन्दी में तीन संयुक्त व्यंजन होते हैं। ये दो व्यंजनों के मेल से बने होते हैं।

क्ष = क् + ष्
त्र = त् + र् + अ
ज्ञ = ज् + ञ् + अ
श्र = श् + र् + अ

अयोगवाह

- वे वर्ण जो न तो स्वर होते है और न ही व्यंजन होते है उन्हें अयोगवाह (अं अः) कहा जाता है।
- अं को अनुस्वार (नाक), अँ को अनुनासिक (नाक मुख) और अः को विसर्ग (कंठ) कहा जाता है ।

वर्णों का उच्चारण स्थान

क्र. सं.	वर्ण	उच्चारण स्थान	उच्चारण ध्वनि
1	क वर्ग, अ, आ और विसर्ग	कंठ कोमल तालु	कंठ्य
2	च वर्ग, इ, ई, य, श	तालु	तालव्य
3	ट वर्ग, ऋ, र, ष	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
4	त वर्ग, लृ, ल, स	दन्त	दन्त्य
5	प वर्ग, उ, ऊ,	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6	अ, ङ, ञ, ण, न्, म्	नासिका	नासिक्य
7	ए ऐ	कंठ तालु	कंठ - तालव्य
8	ओ, औ	कंठ ओष्ठ	कठोष्ठ्य
9	व	दन्त ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य
10	ह	स्वर यन्त्र	अलिजिह्वा

महत्वपूर्ण तथ्य –

- हिंदी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिंदु) का प्रयोग किया जाता है जिन्हें आगत / गृहीत व्यंजन कहा जाता है।

- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है

  क़ – क़रीब

  ख़ – ख़राब

  ग़ – ग़म

  ज़ – ज़रा

  फ़ – फ़न (अंग्रेज़ी)
- नुक्ता / आगत व्यंजनों का आगमन अरबी/फ़ारसी, अंग्रेज़ी भाषा से हुआ है।
- नुक्ता व्यंजन की शुरुआत का श्रेय हिंदी विद्वान "विप्रसाद सितारे हिन्द" को जाता है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य

- हिंदी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अ: (विसर्ग) ध्वनियाँ हैं को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वर में जोड़ा जाता है न ही व्यंजन में
- अनुस्वार (अं) व विसर्ग (अ:) को अयोगवाह नाम देने का श्रेय किशोरी दास वाजपेयी को जाता है
- तालु उच्चारण स्थान पर आने वाले वर्णों को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागों में विभाजित किया गया है
- वर्त्स वर्णों में न, ल, स को शामिल किया गया है इनकी कुल संख्या 4 होती है
  1. जिह्वा
  2. अधरोष्ठ (नीचे का होठ)
  3. स्वर तंत्रियाँ
  4. कोमल तालु
- काकल वर्ण के अंतर्गत विसर्ग (:) को शामिल किया गया है
- **रकार / रेफ या र सम्बंधित नियम**
  - **(i) नियम 1:** यदि र के बाद व्यंजन आए तो र को उसी व्यंजन वर्ण के के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजनवर्ण के ऊपर लिखा जाता है

    जैसे – कर्म, धर्म, स्वर्ग, पुनर्जन्म आदि
  - **(ii) नियम 2:** यदि र से पहले व्यंजन वर्ण आये तो र को उसी व्यंजन वर्ण के मध्य में लिखा जाता है

    जैसे – प्रकाश, भ्रष्ट, प्रभात, प्रेम, क्रम आदि
- **उत्क्षिप्त वर्ण का नियम**
  - ✓ **नियम 1 :** यदि शब्द की शुरुआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

    जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया आदि
  - ✓ **नियम 2:** यदि शब्द के अंतर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

    जैसे – पण्डित, बुड्ढा, खण्ड, मण्डल आदि

    नोट – उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिंदु आती है जैसे – लड़ाई, सड़क,पकड़ना, पढ़ाई आदि

2 CHAPTER संधि

- संधि शब्द का अर्थ है - **वर्ण विकार।**
- दो वर्णों या ध्वनियों के परस्पर व्यवधान रहित संयोग से होने वाले परिवर्तन (विकार) को **संधि** कहते हैं।

उदाहरण के रूप मे → विद्यालय = विद्या + आलय

- अर्थात **विद्या** शब्द का अंतिम वर्ण मे **"आ"** और **आलय** का प्रारम्भिक वर्ण **"आ"** के समीप आने पर दो दीर्घ वर्णों के स्थान पर एक **"आ"** वर्ण रूप मे **एकादेश** हो जाता हैं ।
- **श्री किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार**, "जब दो या अधिक वर्ण पास-पास आते हैं तो कभी-कभी उनमें रूपांतर हो जाता है। इसी रूपांतर को संधि कहते हैं।"
- दूसरी तरफ, इस परिवर्तन से इन ध्वनियों या वर्णों को पुनः अपने मूल रूप में लाने की प्रक्रिया **संधि-विच्छेद** कहलाती है।
- **उदाहरण स्वरूप -**
  - ✓ **संधि :** महा + ईश = महेश [आ + ई =ए (यही परिवर्तन/विकार है)]
  - ✓ **संधि-विच्छेद:** महेश = महा + ईश (पुनः अपने मूल रूप में)

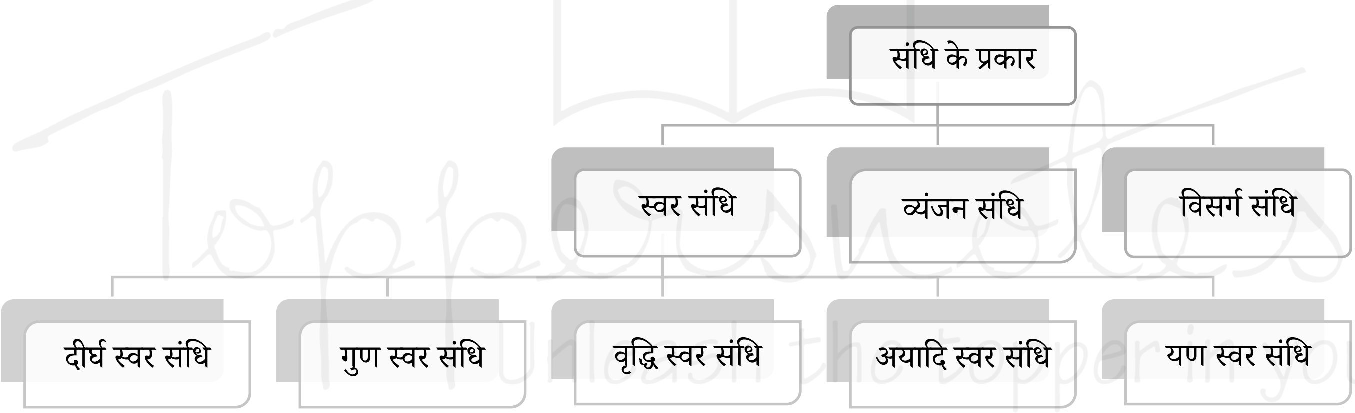

स्वर संधि

- दो **स्वरों के मेल** से उत्पन्न होने वाले विकार या परिवर्तन को **स्वर संधि** कहते है।

उदाहरण के लिए - भाव + अर्थ = भावार्थ

- यहाँ 'भाव' शब्द का अंतिम स्वर 'अ' एवं 'अर्थ' शब्द का पहला स्वर 'अ', दोनों स्वरों के) से 'आ' स्वर की उत्पत्ति हुई, जिससे 'भावार्थ' शब्द का निर्माण हुआ। स्वरों के ऐसे मेल को स्वर-संधि कहते है।

दीर्घ स्वर संधि :

- दो समान स्वर मिलकर जब दीर्घ स्वर में बदल जाते है तो वहाँ **दीर्घ स्वर संधि** होती है।

  या
- यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरों के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमश: आ, ई, ऊ तथा ॠ हो जाते हैं।

उदाहरण :

स्वर	उदाहरण शब्द	संधि से बना नया शब्द
अ + अ = आ	दैत्य + अरि	दैत्यारी
	अन्य + अन्य	अन्यान्य
	मध्य+अवधि	मध्यावधि
	दिवस + अवसान	दिवसावसान
	दीप + अवली	दीपावली
	समान + अधिकार	समानाधिकार
	कल्प + अंत	कल्पान्त
	स + अवधान	सावधान
	मार्त + अण्ड	मार्तण्ड
	दिन + अन्त	दिनान्त
	सुख + अन्त	सुखान्त
	अन्न + अभाव	अन्नाभाव
	सह + अनुभूति	सहानुभूति
	पर + अधीन	पराधीन
	उत्तर + अयन	उत्तरायण
	अधिक + अंश	अधिकांश
	पाठ + अंतर	पाठान्तर
अ + आ = आ	देव + आनन्द	देवानन्द
	पुस्तक + आलय	पुस्तकालय
	भोजन + आलय	भोजनालय
	देव + आलय	देवालय
	न्याय + आलय	न्यायालय
	पत्र + आलय	पत्रालय
	मरण + आसन्न	मरणासन्न
	हिम + आलय	हिमालय
	शिव + आलय	शिवालय
आ + अ = आ	विद्या + अर्थी	विद्यार्थी
	तथा+अपि	तथापि
	महा + अर्णव	महार्णव
	परीक्षा + अर्थी	परीक्षार्थी
	यथा + अर्थ	यथार्थ
	विद्या + अभ्यास	विद्याभ्यास
	आज्ञा + अनुसार	आज्ञानुसार
	तथा + अस्तु	तथास्तु
आ + आ = आ	विद्या + आलय	विद्यालय
	श्रद्धा + आनंद	श्रद्धानंद
इ + इ = ई	कवि + इन्द्र	कवीन्द्र
	रवि + इंद्र	रवीन्द्र
	अभि + इष्ट	अभीष्ट
	अति + इव	अतीव
ई + इ = ई	मही + इन्द्र	महीन्द्र
	शची + इंद्र	शचींद्र
	फणी+ इन्द्र	फणीन्द्र
	सुधी + इन्द्र	सुधीन्द्र
	देवी + इच्छा	देवीच्छा
इ + ई = ई	गिरि + ईश	गिरीश
	कपि + ईश	कपीश
	परि + ईक्षा	परीक्षा
	हरि + ईश	हरीश
	मही + ईश	महीश
ई + ई = ई	रजनी + ईश	रजनीश
	पृथ्वी + ईश	पृथ्वीश
	फणी + ईश्वर	फणीश्वर
	नारी + ईश्वर	नारीश्वर
उ + उ = ऊ	भानु + उदय	भानूदय
	गुरु + उपदेश	गुरूपदेश
	सु + उक्ति	सूक्ति
उ + ऊ = ऊ	वसु + उत्सव	वसूत्सव
	अम्बु + ऊर्मि	अंबूर्मि
	धातु + ऊष्मा	धातूष्मा
ऊ + ऊ = ऊ	भू + ऊर्जा	भूर्जा
	वधू + ऊर्मि	वधूर्मि
	भू + ऊर्ध्व	भूर्ध्व
ऋ + ऋ = ऋ	पितृ + ऋण	पितृण

गुण संधि :

- इस संधि के तहत यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' की ध्वनि आती है तो वह 'ए’ में बदल जाती है, 'उ' या 'ऊ' की ध्वनि आती है तो वह 'ओ’ में बदल जाती है तथा 'ऋ' की ध्वनि आती है तो वह 'अर्' में बदल जाती है।
- अ, ए एवं ओ वर्णों को 'गुण' वर्ण कहा जाता है।

उदाहरण :

स्वर	**शब्द**	**नया शब्द (संधि)**
अ + इ = ए	देव + इन्द्र	देवेन्द्र
अ + ई = ए	प्र + इषिति	प्रेषिति
आ + इ = ए	प्र + इत	प्रेत
आ + ई = ए	शुभ + इच्छा	शुभेच्छा
	राम + इन्द्र	रमेन्द्र
	गण + ईश	गणेश
	खग + ईश	खगेश
	यथा + इष्ट	यथेष्ट
	राजा + इन्द्र	राजेन्द्र
	रमा + ईश	रमेश
	नर+ इन्द्र	नरेंद्र
	सुर + इंद्र'	सुरेंद्र
	उप + इन्द्र	उपेन्द्र
	जित + इन्द्रिय	जितेन्द्रिय
	परम + ईश्वर	परमेश्वर
	महा + ईश्वर	महेश्वर
	देव + ईश	देवेश
	महा + इन्द्र	महेन्द्र
	नर + ईश	नरेश
	नाग + ईश	नागेश
	भुवन + ईश्वर	भुवनेश्वर
	सुर+ ईश	सुरेश
	भारत + इंदु	भारतेंदु
	हृषीक + ईश	हृषीकेश
अ + उ = ओ	वीर + उद्धत	वीरोद्धत
	प्र + उत्साहन	प्रोत्साहन
	पुष्प + उद्यान	पुष्पोद्यान
	प्राप्त + उदक	प्राप्तोदक
	वन + उत्सव	वनोत्सव
	हिम + उपल	हिमोपल
	पूर्ण + उपमा	पूर्णोपमा
	सर्व + उदय	सर्वोदय
	सांग + उपांग	सांगोपांग
	दीप + उत्सव	दीपोत्सव
	सूर्य + उदय	सूर्योदय
	सर्व + उत्तम	सर्वोत्तम
	कर्ण + उद्धार	कर्णोध्दार
	चन्द्र + उदय	चन्द्रोदय
	पर + उपकार	परोपकार

अ + ऊ = ओ	जल + ऊर्मि	जलोर्मि
	प्र + ऊढ़	प्रौढ़
	नव + ऊढ़ा	नवोढ़ा
	अक्ष + ऊहिनी	अक्षौहिणी
आ + उ = ओ	महा + उत्सव	महोत्सव
	महा + उदधि	महोदधि
	यथा + उचित	यथोचित
	महा + उदय	महोदय
	महा + उर्मि	महोर्मि
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि	गंगोर्मि
	यमुना+ऊर्मि	यमुनोर्मि
अ + ऋ = अर्	कपट + ऋषि	कपटर्षि
	अधम + ऋण	अधर्मण
	देव + ऋषि	देवर्षि'
	राज + ऋषि	राजर्षि
	सप्त + ऋषि	सप्तर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि	महर्षि

वृद्धि संधि :

- इस संधि के तहत यदि ‘अ’ या ‘आ’ के बाद ‘ए’ या ‘ऐ’ की ध्वनि आती है तो वह 'ऐ' में और यदि 'ओ' या 'औ' की ध्वनि आती है तो वह 'औ' में बदल जाती है।
- आ, ऐ एवं औ वर्णों को 'वृद्धि' वर्ण कहते हैं।

उदाहरण :

संधि	**शब्द**	**नया शब्द (संधि फल)**
अ + ए = ऐ	एक + एक	एकैक
	जीव + एषणा	जीवैषणा
अ + ऐ = ऐ	परम + ऐश्वर्य	परमैश्वर्य
	भाव + ऐक्य	भावैक्य
	मत + ऐक्य	मतैक्य
	तत्र + एव	तत्रैव
	विश्व+ऐक्य	विश्वैक्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव	सदैव
	तथा + एव	तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य	महैश्वर्य
	विद्या + ऐश्वर्य	विद्यैश्वर्य

अ + ओ = औ	परम + ओज	परमौज
आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी महा + औदार्य	महौजस्वी महौदार्य
अ + औ = औ	वन + औषधि	वनौषधि
आ + औ = औ	महा + औषध	महौषध

यण् संधि :

- इस संधि के अंतर्गत यदि 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो वे निम्नानुसार परिवर्तित हो जाते है -
  - ✓ इ / ई → य् ,
  - ✓ उ / ऊ → व् ,
  - ✓ ऋ → र्।
- साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य्, व्, र् में लग जाती है।
- वि + अव + हार = व्यवहार (इसमें 'अव' मूल शब्द 'वि' उपसर्ग तथा 'हार' प्रत्यय है।)

उदाहरण :

संधि का नियम	**संधि-विच्छेद (मूल शब्द)**	**नया शब्द (संधि-फल)**
इ + अ = 'य्'	अति + अधिक यदि + अपि प्रति+अय प्रति + अंग गति + अवरोध अभि + अर्थी वि + अभिचार रीति + अनुसार इति + अर्थ वि + अर्थ अति + अल्प अनु + अय	अत्यधिक यद्यपि प्रत्यय प्रत्यंग गत्यवरोध अभ्यर्थी व्यभिचार रीत्यनुसार इत्यर्थ व्यर्थ अत्यल्प अन्वय

इ + आ = य	इति + आदि वि + आकुल अति + आवश्यक प्रति + आरोपण वि + आयाम अति + आचार	इत्यादि व्याकुल अत्यावश्यक प्रत्यारोपण व्यायाम अत्याचार
ई + अ = 'य्'	नदी + अर्पण देवी + अर्पण देवी + अर्थ	नद्यर्पण देव्यर्पण देव्यर्थ
ई + आ = य	नदी + आगम देवी + आगम सरस्वती + आराधन	नद्यागम देव्यागम सरस्वत्याराधन
इ + उ = यु	अति + उत्तम प्रति + उपकार प्रति + उत्तर अति + उक्ति अति + उत्तम अभि + उदय उपरि + उक्त	अत्युत्तम प्रत्युपकार प्रत्युत्तर अत्युक्ति अत्युत्तम अभ्युदय उपर्युक्त'
ई + उ = यु	सखी + उचित स्त्री + उपयोगी	सख्युचित स्त्र्युपयोगी
इ + ऊ = यू	अति + ऊष्म नि + ऊन	अत्यूष्म न्यून
ई + ऊ= यू	नदी + ऊर्मि	नद्यूर्मि
इ + ए = ये	प्रति + एक देवी + एकता	प्रत्येक देव्येकता
इ + ऐ = यै	देवी + ऐश्वर्य	देव्यैश्वर्य
इ + ओ = यो	दधि + ओदन	दध्योदन
उ + अ = व्	सु + अच्छ सु + अल्प मधु + अरि	स्वच्छ स्वल्प मध्वरि
उ + आ = वा	सु + आगत गुरु + आश्रम	स्वागत गुर्वाश्रम
ऊ + आ = वा	भू + आदि वधू + आगमन	भ्वादि वध्वागमन
उ + ए = वे	अनु + एषण	अन्वेषण

Toppersnotes Unleash the topper in you

उ + इ = वि	अनु + इति धातु + इक	अन्विति धात्विक
ऊ + इ = वि	वधू + इच्छा	वध्विच्छा
ऋ + अ = र्	पितृ + अनुमति	पित्रनुमति
ऋ + आ = र	पितृ + आज्ञा मातृ + आज्ञा मातृ + आनन्द पितृ + आदेश	पित्राज्ञा मात्राज्ञा मात्रानन्द पित्रादेश
ऋ + इ = रि	मातृ + इच्छा	मात्रिच्छा
ऋ + उ= रु	भ्रातृ + उपकार	भ्रात्रुपकार

अयादि संधि :

➢ यदि 'ए' या 'ऐ' और 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो निम्न रूप से विकार देखने को मिलता हैं।
  - ✓ ए → अय् में,
  - ✓ ऐ → आय् में ,
  - ✓ ओ → अव्
  - ✓ औ → आव्

उदाहरण :

संधि का नियम	संधि-विच्छेद (मूल शब्द)	नया शब्द (संधि-फल)
ए + अ = अय	ने + अन शे + अन चे + अन	नयन शयन चयन
ऐ + अ = आय	नै + अक गै + अक गै + अन	नायक गायक गायन
ओ + अ = अव	पो + अन	पवन
ओ + इ = अवि	पो + इत्र	पवित्र
औ + अ = आव	पौ + अक श्रौ + अन श्रौ + अक	पावक श्रावण श्रावक
औ + ई = आवि	नौ + इक	नाविक
औ + उ = आवु	भौ + उक	भावुक

व्यंजन संधि

➢ किसी व्यंजन का किसी अन्य व्यंजन या स्वर के साथ मेल होने पर ध्वनियों में उत्पन्न होने वाले विकार को ही व्यंजन संधि कहते है।

➢ व्यंजन संधि का अन्य नाम (संस्कृत मे) - **हल् संधि**

व्यंजन संधि के कुछ नियम			
संधि का नियम	**नियम**	**संधि-विच्छेद**	**सधि-फल**
1. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात 'ग', 'ज', 'ड', 'द', 'ब', हो जाता है।	क् → ग्, च् → ज्, ट् → ड्, त् → द्, प् → ब्	वाक् + ईश वाक् + ईश्वर दिक् + गज दिक् + दर्शन दिक् + अंबर वाक् + दान सत् + वाणी अच् + अंत अप् + इंधन तत् + रूप जगत् + आनंद	वागीश वागीश्वर दिग्गज दिग्दर्शन दिगंबर वाग्दान सद्वाणी अजंत अबिंधन तद्रूप जगदानंद

		सत् + भावना षट् + आनन सत् + गति उत् + ज्वल तत् + अनन्तर उत् + गम उत् + योग जगत् + ईश षट्+रिपु कृत् + अंत जगत् + अंबा सत् + धर्म सुप् + अन्त उत् + विग्न सत् + आनन्द अप् + धि दिक् + अन्त तत् + अनुकूल	सद्भावना षडानन सद्गति उज्ज्वल तदनन्तर उद्गम उद्योग जगदीश षड्रिपु कृदन्त जगदम्बा सद्धर्म सुबंत उद्विग्न सदानन्द अब्धि दिगन्त तदनुकूल
2. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद 'न' या 'म' आए तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' अपने वर्ग के पंचम वर्ण अर्थात् ङ्, ञ, ण, न, म् में बदल जाते हैं।	क्→ङ्, च्→ञ्, ट्→ण्, त्→न्, प्→म्	वाक् + मय षट् + मास जगत् + नाथ अप् + मय तत् + मय सत् + मार्ग उत् + नति उत् + नयन दिक् + नाग षट् + मुख सत् + निवेश दिक् + मण्डल विव्दत् + मूर्ति	वाङ्मय षण्मास जगन्नाथ अम्मय तन्मय सन्मार्ग उन्नति उन्नयन दिङ्नाग षण्मुख सन्निवेश दिङ्मण्डल विव्दन्मूर्ति
3. यदि 'म्' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन आए तो 'म' जुड़ने वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण या अनुस्वार हो जाता है। (अपवाद- सम् + कृत = संस्कृत सम् + कृति = संस्कृति)	म् → अनुस्वार/पंचम	अहम + कार किम् + चित् सम् + गम सम् + तोष सम् + चय सम् + मान किम् + कर किम् + नर	अहंकार किंचित् संगम संतोष संचय सम्मान किंकर किन्नर

Toppersnotes
Unleash the topper in you

		सम् + कल्प सम् + पूर्ण पम् + चम अकिम् + चन दिवम् + गत परम्+ तु सम् + तप्त सम् + मति अवश्यम् + भावी सम् + शय सम् + विधान	संकल्प संपूर्ण पंचम अकिञ्चन दिवङ्गत परन्तु संतप्त सम्मति अवश्यम्भावी संशय संविधान
4. यदि म् के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से किसी भी वर्ण का मेल हो तो 'म' के स्थान पर अनुस्वार ही लगेगा।	म् → (अनुस्वार)	सम् + योग सम् + रचना सम् + वाद सम् + सार सम् + रक्षण सम् + हार	संयोग संरचना संवाद संसार संरक्षण संहार
5. यदि त् या द् के बाद 'ल','ट', 'ड' रहे तो 'त्' या 'द्' क्रमशः 'ल्', 'ट्', 'ड्' में बदल जाता है।	**त्/द् + ल → ल्**	उत् + लास उद् + लेख तत् + लीन उद् + लाघ उत् + लंघन तडित् + लेखा तत् + टीका	उल्लास उल्लेख तल्लीन उल्लाघ उल्लंघन तडिल्लेखा तट्टीका
6. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ज'/'झ' या 'म' हो तो 'त्' या 'द्'क्रमशः 'ज्' या 'न्', में बदल जाता है।	**त्/द् → ज्**	सत् + जन उद् + झटिका विपत् + जाल जगत् + जीवन शरद् + माला उपनिषद् + मीमांसा जगत् + जननी	सज्जन उज्झटिका विपज्जाल जगज्जीवन शरन्माला उपनिषन्मीमांसा जगज्जननी
7. यदि 'त्' या 'द्' वर्ण के बाद 'श' वर्ण आता है, तो 'त्' या 'द्' का परिवर्तन 'च्' में हो जाता है और 'श' का परिवर्तन 'छ' में हो जाता है।	**त्/द् →च्** **श → छ्**	उद् + श्वास उद् + शिष्ट सत् + शास्त्र मृद + शकटिक विद्युत् + शक्ति तत् + शंकर	उच्छ्वास उच्छिष्ट सच्छास्त्र मृच्छकटिक विद्युच्छक्ति तच्छंकर

8. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'च' या 'छ' हो तो 'त्' या 'द्' का 'च्' हो जाता है।	**त्/द् →च्**	उत् + चारण सत् + चरित्र वृहत् + चयन उत् + छिन्न सत् + चित सत् + चित् + आनन्द	उच्चारण सच्चरित्र वृहच्चयन उच्छिन्न सच्चित सच्चिदानन्द (नियम=1+8)
9. 'त्' या 'द्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' एवं 'द्' के स्थान पर 'दू' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है।	**त्/द् → दू, ह → ध**	तत् + हित उत् + हार पद् + हति	तद्धित उद्धार पद्धति
10. जब पहले पद के अंत में स्वर हो और आगे के पद का पहला वर्ण 'छ' हो तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है।	**छ → च्छ**	अनु + छेद परि + छेद आ + छादन संधि + छेद स्व + छंद वृक्ष + छाया श्री + छाया प्र + छन्न लक्ष्मी + छाया मातृ + छाया	अनुच्छेद परिच्छेद आच्छादन संधिच्छेद स्वच्छंद वृक्षच्छाया श्रीच्छाया प्रच्छन्न लक्ष्मीच्छाया मातृच्छाया
11. यदि किसी शब्द के अंत में 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए एवं दूसरे शब्द के आरंभ में 'स' हो तो तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जाता है।	**स → ष**	अभि + सेक वि + सम नि + सिद्ध सु + सुप्ति वि + साद सु + स्मिता	अभिषेक विषम निषिद्ध सुषुप्ति विषाद सुष्मिता
12. ऋ, र, ष के बाद जब कोई स्वर, कोई 'क' वर्गीय या 'प' वर्गीय वर्ण, अनुस्वार अथवा य, व, ह में से कोई वर्ण आए तो अंत में आने वाला 'न', 'ण' हो जाता है।	**न → ण**	भर् + अन भूष् + अन राम + अयन प्र + मान	भरण भूषण रामायण प्रमाण
13. यदि 'अहन्' शब्द के बाद 'र' आए तो 'अहन्' का 'अहो' हो जाता है	**अहन्** + **र** = **अहो**	अहन् + रात्रि अहन् + रूप	अहोरात्र अहोरूप
14. यदि 'द्' के बाद 'क-ख', 'त-थ', 'प-फ', 'श-ष' आए तो 'द्' अपने ही वर्ग के प्रथम व्यंजन 'त्' में बदल जाता है	**द् → त्**	तद् + पर सद् + कार उद् + साह	तत्पर सत्कार उत्साह

15. 'इ/उ' के बाद 'स्त', 'स्थ', 'स्न' आए तो उनका क्रमशः 'ष्ट', 'ष्ठ', 'ष्ण'हो जाता है	**स → ष**	नै + स्थिक नि + सन्न	नैष्ठिक निषन्न
16. यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' आए तो 'न' 'ण' में बदल जाता है	**न → ण**	परि + नय परि + नाम	परिणय परिणाम
17. यदि प्रथम वर्ण + घोष वर्ण (पंचम वर्ण को छोड़कर) आये तो प्रथम वर्ण अपने वर्ग के तृतीय वर्ण में रूपांतरित हो जाएगा		ऋक् + वेद'	ऋग्वेद
	त् + आ = द्	सत् + आनन्द	सदानंद
18. व्यंजन संधि में यदि त् \+ ट आये तो त् का ट्, त् \+ ड आये तो त् का ड् तथा त् \+ ल् आये तो त् का ल् हो जाएगा।		उत् + डयन	उड्डयन

विसर्ग संधि

➢ जब विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होता है तो इससे शब्द में विकार या परिवर्तन हो जाता है जिसे **'विसर्ग संधि'** कहते हैं।

विसर्ग संधि के नियम			
संधि का नियम	**नियम**	**संधि-विच्छेद**	**संधि-फल**
1. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में 'अ' हो तो दोनों का विकार 'ओ' हो जाता है।	**अः + अ = ओ**	मनः + अनुकूल यशः + अभिलाषा अन्यः + अन्य मन: + अनुसार	मनोनुकूल यशोभिलाषा अन्योन्य मनोनुसार
2. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद वाले शब्द का पहला अक्षर 'अ' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।	**अः + अ = अ (विसर्ग लोप)**	अतः + एव यशः + इच्छा	अतएव यशइच्छा
3. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में किसी वर्ग का तृतीय/चतुर्थ वर्ण अथवा म, य, र, ल, व, ह आए तो विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है।	**अः + (ग, घ, द, ध, य, र, ल, व ...) = ओ**	मन:+हर तपः + वन तमः + गुण पयः + द सरः + वर वय: + वृद्ध वयो: + वेग तेजः + बल यशः + धरा मनः + रथ	मनोहर तपोवन तमोगुण पयोद सरोवर वयोवृद्ध वयोवेग तेजोबल यशोधरा मनोरथ

		मनः + रंजन यश: + दा मन:+ दशा रज: + दर्शन यशः + वर्मन नभः + मण्डल अन्ततः + गत्वा सरः + ज यश: + भूमि शिरः +भाग तप: + भूमि मन: + विकार शिर: + रेखा तिरः + धान रजः + भव	मनोरंजन यशोदा मनोदशा रजोदर्शन यशोवर्मन नभोमण्डल अंततोगत्वा सरोज यशोभूमि शिरोभाग तपोभूमि मनोविकार शिरोरेखा तिरोधान रजोभव
4. यदि विसर्ग के बाद अ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर अथवा किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या 'य' 'ल' 'व' 'ह' हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है।	**विसर्ग → र्**	अंत: + ध्यान दु: + उपयोग आयुः + वेद ज्योतिः + मय चतुः + दिशि पुन: + जन्म नि: + आहार निः + जल निः + धन दु: + आत्मा निः + लोभ आशी: + वाद आशी: + वचन दुः + गुण दुः + गंध दु: + ऊह निः + आशा दुः + दशा नि: + भय नि: + उपाय नि: + गुण नि: + मल पुनः + उक्ति बहिः + एकता	अंतर्ध्यान दुरुपयोग आयुर्वेद ज्योतिर्मय चतुर्दिश पुनर्जन्म निराहार निर्जल निर्धन दुरात्मा निर्लोभ आशीर्वाद आशीर्वचन दुर्गुण दुर्गंध दुरूह निराशा दुर्दशा निर्भय निरुपाय निर्गुण निर्मल पुनरुक्ति बहिरेकता

5. यदि विसर्ग के बाद 'च'/'छ' या तालव्य 'श' हो तो विसर्ग 'श्' में बदल जाता है।	**विसर्ग → श्**	पुनः + च तपः + चर्या यशः + शरीर मन: + चिकित्सा निः + चय नि: + छल निः + चल हरिः + चन्द्र	पुनश्च तपश्चर्या यशश्शरीर मनश्चिकित्सा निश्चय निश्छल निश्चल हरिश्चंद्र
6. यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' हो और बाद में 'त' या दंत्य 'स' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है।	**विसर्ग → स्**	पर: + पर नमः + ते मनः + ताप दु: + तर चन्द्र: + तम	परस्पर नमस्ते मनस्ताप दुस्तर चन्द्रस्तम
7. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और बाद में 'क/ख/प/फ' वर्ण हो तो विसर्ग मूर्धन्य 'ष्' में बदल जाता है।	**विसर्ग → ष्**	आविः + कार परि: + कृत चतुः + पाद नि: + कपट दु: + प्रकृति दुः + कर्म दु: + कर दु: + परिणाम निः + प्राण निः + फल निः + काम नि: + पाप	आविष्कार परिष्कृत चतुष्पाद निष्कपट दुष्प्रकृति दुष्कर्म दुष्कर दुष्परिणाम निष्प्राण निष्फल निष्काम निष्पाप
8. यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' हो और बाद में 'क/ख' अथवा' प/फ' हो तो विसर्ग 'स्' में बदल जाता है	**विसर्ग → स्**	पुरः + कार नम: + कार श्रेयः + कर तिर: + कार भा: + कर	पुरस्कार नमस्कार श्रेयस्कर तिरस्कार भास्कर
9. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और बाद में 'र्' हो तो विसर्ग से पहले के 'इ' या 'उ' स्वर क्रमशः 'ई' या 'ऊ' में बदल जाते है	**दिर्घीकरण**	निः + रव नि: + रस निः + रोग नि:+ रज	नीरव नीरस नीरोग नीरज

10. विसर्ग + ट/ठ = विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन	**विसर्ग → ष्**	धनुः + टंकार	धनुष्टंकार
11. विसर्ग + त/थ = विसर्ग का 'स्' में परिवर्तन	**विसर्ग → स्**	नि:+ तार निः + तेज इतः + ततः	निस्तार निस्तेज इतस्ततः
12. विसर्ग + श/स = विसर्ग का क्रमशः 'श'/'स्' में परिवर्तन	**विसर्ग → श/स्**	निः + सन्देह दुः + शासन दुः + साहस	निस्सन्देह दुश्शासन दुस्साहस
13. यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और बाद में 'क/ख' या 'प/फ' हो तो विसर्ग सुरक्षित रहता है	**विसर्ग → :**	मन: + कामना अन्तः + करण प्रातः + काल पुनः + प्राप्ति	मन:कामना अन्तःकरण प्रातःकाल पुनःप्राप्ति

Toppersnotes
Unleash the topper in you